आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 5/अंक 1/मार्च 2025
Received:16/3/2025; Accepted:20/3/2025; Published:25/3/2025

रीता सिन्हा की कहानियों में वक्त के साथ बदलते रिश्तों के रुख

केसरबेन राजपुरोहित
अतिथि व्याख्याता
हिंदी विभाग ,मालाबार क्रिश्चियन कॉलेज ,कालीकट
मो –9207433926
ई मेल –kesarclt@gmail.com

केसरबेन राजपुरोहित,**रीता सिन्हा की कहानियों में वक्त के साथ बदलते रिश्तों के रुख** , आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 5/अंक 1/मार्च 2025,** (17-22) https://doi.org/10.5281/zenodo.15097486

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

शोध सार

वर्तमान समय में हर व्यक्ति अपने निजी जीवन में व्यस्त है। कई चिंताऐं हैं ,बाधाऐं हैं ,उलझने हैं जिन्हें सुलझाने की जद्दोजहद में है। कई स्पर्धाऐं हैं ,जिन्हें जीतने की कोशिश में है। कई सपनें हैंजिन्हें पाने की चाहत , में है। लेकिनइन सब के बीच जो रिश्तों में दूरियाँ बढ़ रही है ,उस पर भी ध्यान देना आवश्यक है। रीता सिन्हा जी की कहानियाँ वर्तमान समय में रिश्तों के बदलते रुख पर गहरी चिंता व्यक्त करती है। एकबारगी व्यक्ति के मन में रिश्तों की कम होती अहमियत पर सोचने के लिए मजबूर कर देती है। 'पापा आप गलत नहीं हैं' कहानी की कल्पना भरोसा कर के जितेंद्र के साथ रजिस्टर्ज मैरिज के बदले मंदिर में विवाह करती है। लेकिन वह उसे छोड़कर ऑफिस में काम करनेवाली लड़की से शादी कर लेता है। उसने एक बार भी नहीं सोचा कि कल्पना ने उसके लिए अपनी पढ़ाई परिवार सब-छोड़ दिया था। 'अब मेरे 'मैं' को मत छीनो' की प्रियंका 'सक्सेना' परिवार की बेटी है। 'पांडे' परिवार उसे गोद लेता है। लेकिन प्रियंका को प्यार और सुकून 'नाजिया शेख' बनकर मिलता है। 'काँपती रूहें' में लड़की का सामुहिक बलात्कार हुआ है। जिसमें उसकी कोई गलती नहीं है। लेकिन उसके पिता समाज में बदनामी के डर से मीडिया में उसका नाम न देने की विनती करते हैं। 'फाइलें, प्लेटफॉर्म ,

मुर्दाघर और वह पुलिया' कहानी में एक बुजुर्ग जिनके बच्चे लंदन अमेरिका-में रहते हैं। अकेलापन उनमें इस तरह घर कर बैठा है कि वे हर किसी को शक की नज़रों से देखते हैं। 'गोरैया अब कम दिखने लगी है' में श्रेयस जब आईएएस बन जाता है ,तब सब का नज़रिया उसके प्रति किस तरह से बदल जाता है वह बड़ी बात है। कह सकते है कि आज व्यकि रिश्तों को भी जरुरत के अनुसार तोलने लगा है। लेकिन सच ये भी है "Those people who logically examine the relationships can never stay in any relationship.''[1] ("जो लोग रिश्तों को तार्किक रूप में परखते हैं वे कभी किसी रिश्ते में टिक नहीं पाते।")

उद्देश्य

जरुरत के अनुसार बदलते रिश्तों की वजह। रिश्तों में अविश्वास की भावना के कारण। निर्दोष होते हुए भी समाज में बदनामी के डर की वजह।

प्रस्तावना

'पापा आप गलत नहीं हैं' कल्पना नामक लड़की की कहानी है। सालो बाद वह लेखिका को मेट्रो में सफर करते वक्त मिलती है। उसने मातापिता के खिलाफ जाकर जितेंद्र से शादी की थी-। लेखिका को देखकर उसकी आँखे छलछला आती हैं। लेकिन वह आँसू पोंछ लेती है। वह नहीं चाहती कि कोई उसके आँसू देखे। लेखिका के पिता जी कहते थे कि लड़कियाँ अपने आँसूओं से पुरुषों को कमजोर बनाती है। कल्पना को देखकर लगता है कि आज लड़कियाँ स्वयं को किसी के सामने कमजोर नहीं दिखाना चाहती। वक्त के साथ वे खुद को संभालना सीख गई है। कहते है बीते हुए कल को भूलकर आगे बढ़ना चाहिए। लेकिन हमारा वर्तमान कहीं न कहीं बीते हुए कल की ही देन होता है। तभी लेखिका कहती है "इतिहास वर्तमान से पूरी तरह कटा नहीं होता जीवन का इतिहास मृत्यु के पन्नों में होता है लेकिन वर्तमान आँखों के सामने"[2] जब लेखिका ने कल्पना को देखकर उसकी शादी के बारे में पूछा तो कल्पना ने कहाँ "हाँ आँटी मैंने शादी कर ली थी, पर वह टिकी नहीं।"[3] कल्पना का यह जवाब सुनकर लेखिका को ऐसा लगा जैसे "वह बोल रही है कि आँटी बाजार से मैं जो सामान लेकर आई थी न, वह बेकार निकल गई।"[4] कितनी आसानी से कल्पना ने सच को स्वीकार कर लिया था। शादी का टुटना कभी ज़िंदगी और मौत का सवाल भी हुआ करता था। लेकिन बदलते वक्त के साथ इंसान आपनी भावनाओं पर काबू पाना सीख जाता है। साथ ही ऐसा लगता है कि रिश्तों के मायनें भी बदल रहे हैं। कल्पना ने जितेंद्र के साथ मंदिर में विवाह किया था। जितेंद्र ने कहा था कि "पति पत्नी के रिश्ते की बुनियाद विश्वास और भरोसे पर होती है"[5] हालाँकि परिवारवालों की इच्छानुसार एक कमाऊ लड़की के साथ दूसरी शादी करते हुए उसने कल्पना की भावनाओं और भरोसे को जो ठेस पहुँचाई उस बारे में उसने एक बार भी नहीं सोचा। शादी के बाद कल्पना के पिता महेश बाबू किसी से नजरे भी नहीं मिलाते थे। उन्हें अपराध बोध था कि उनके संस्कारों में कोई कमी रह गई। इसलिए उनकी बेटी ने इतनी बड़ी गलती की है। कल्पना ने इस तरह शादी करके उन्हें सबके

सामने शर्मिंदा किया है। हार्ट अटैक से उनकी मृत्यु हो जाती है। कल्पना की शादी के बाद लेखिका उसके घर गई। तब देखा कि कल्पना के घर में सामने की टेबल पर उसकी जो तस्वीरे लगी हुई थी। वे अब अलमारी के ऊपर रख दी गई थी। तब लेखिका के मन में खयाल आता है कि लड़की ने शादी ही की है न कोई गुनाह तो नहीं किया। लेकिन वह चाहकर भी कल्पना की माँ से यह बात नहीं कह पाती। समाज को महत्व देना जरुरी है। व्यक्ति समाज का ही एक अंग है। लेकिन अपनों की परवा करना भी जरुरी है। परिवार के प्रति आदर होगा तो समाज के प्रति भी होगा। समाज के दबाव में अपनों को छोड देना भी तो सही नही। लेखिका यूनिवर्सिटी कैंपस में पहुँचती है तब भी कल्पना से जुड़ी बातें उन्हें परेशान करती हैं। वे सोचती हैं कि अगर कल्पना के पास अच्छी जॉब होती तो वह लड़का उसे नहीं ठुकराता। सहीगलत का निर्णय लेना आसान नहीं है। कई कमजोरिया होती - जो हमें अपने रास्ते से भटकाती है। दुविधा हर जगह सामने खड़ी होती है। तभी ,हैलेखिका कहती है कि "जीवन में हर मोड़ पर आदमी को हमेशा चौराहा मिल ही जाता है। उसे याद रखना पड़ता है कि उसे किस ओर जाना है। भावुकता हमें भटकाती है, कभीकभी बुद्धि भी हमें भ्रमित करती है। चयन करना आसान नहीं है-, क्योंकि भविष्य का रास्ता भी इसी से होकर जाता है।"[6]

'अब मेरे 'मैं' को मत छीनो' कहानी में प्रियंका के पिताजी जूनियर इंजीनियर थे। लेकिन शराबी थे। उन्हें अपनी जिम्मेदारियों का कोई एहसास नहीं था। पहले दो बेटियाँ थी। लेकिन बेटा चाहिए था। उनकी पत्नीने तीसरी बार दो जुड़वा बच्चों को जन्म दिया। एक लड़का और एक लड़की। एक तरफ मिसेज पांडे ने मृत बच्ची को जन्म दिया था। पहले भी दो बार ऐसा हो चुका था। मिस्टर पांडे ने मिसेज सक्सेना से उनकी बेटी को गोद देने की विनती की। वह दुखी थी। लेकिन घर के हालात भी ऐसे थे कि बच्ची जिंदा रहेगी यह सोचकर उन्होंने अपनी बेटी को गोद दे दिया। तब लोगों का कहना ये भी था कि कठोर माँ है। लेकिन उस माँ की मजबूरी समझने की कोशिश कोई नहीं करता। शुरू में मिस्टर और मिसेज पांडे प्रियंका से बहुत प्यार करते थे। उसकी हर छोटीबड़ी - आँखों पर रखते थे।-ख्वाहिइश सर लेकिन श्रेया के जन्म के बाद प्रियंका के प्रति दोनों का व्यवहार बदल जाता है। वे प्रियंका को नानी के घर भेज देते हैं। एक और बहन का जन्म हुआ तब मासूम बच्ची के मन में खयाल आता है कि अब श्रेया को भी नानी के पास भेज दिया जायेगा। इस पर नानी कहती है कि "तुम बेकार की बातें काफ़ी अधिक बोलती हो। तुममें और उसमें अंतर नहीं है क्या...?"[7] जिस प्रियंका को विनती करके गोद लिया था। नानी आज उसे उसकी जगह दिखा रही थी। उसका सगा भाई हर साल राखी बंधवाने आता था। एक बार प्रियंका ने उसके परिवार से मिलने की जिद की। तब प्रियंका को सारी सच्चाई पता चल जाती है। प्रियंका की बड़ी बहन जो माइक्रोबायोलॉजी में एमएससी कर रही थी, उसने प्रियंका को एक दिन फोन करके अपने घर वापस बुला लिया। प्रियंका ने कहा कि परिवारवालों ने तो उसका परित्याग कर दिया है। बडी बहन का कहना था कि "परित्याग नहीं, तुम्हारे जीने और सुख के लिए वह मेरी माँ की एक व्यवस्था थी, लेकिन उन लोगों ने तो तुम्हें कभी अपना समझा ही नहीं।"[8] बड़ी बहन भावनाओं की कद्र करना जानती है। आज हालात थोडे बहतर होते ही उसने अपनी छोटी बहन को घर बुलाने में कोई देर नहीं की। प्रियंका अपने घर लौटती है। लेकिन परिवार के लोगों को अपना नहीं समझ पाती। उसकी शादी आमिर शेख से होती है। आमिर को पाकर वह

सोचती है कि "जिंदगी में पहली बार एक व्यक्ति मिला आमिर, जिसे पाकर मुझे लगा कि कोई मेरा अपना है, जो मेरे साथ है। मैं अपने भीतर के बोझ को न मम्मी से बाँट पाई, न नानी से, न माँ से, न बहनों से। पापा और बाबूजी से तो मुझे केवल चोट ही मिली। मैं 'प्रियंका सक्सेना' थी, लेकिन 'प्रियंका पांडे' बना दी गई। पर न पांडे रही और न सक्सैना बन पाई। अब 'नाजिया शेख' में लग रहा है कि मैं भी इंसान हूँमेरा भी जीवन है !, मेरा अपना जीवन...!"[9] अपनों से खुशी मिलती हैअपनापन पाकर व्यक्ति का वजूद खिल उठता है। इसमें कोई संदेह , नहीं है।

'काँपती रूहें' अमानवीयता की हदों को दर्शाती है। एक लड़की का गैंगरेप करके उसे निर्वस्त्र रास्ते पर छोड़ दिया जाता है। एक दंपति उस रास्ते से गुजर रहे थे। पत्नी अपने पति से इस मामले से दूर रहने के लिए कहती है। डीसीपी ए.के गर्ग लड़की की हालत देखकर इंसान की हैवानियत पर शर्मसार होते हैं। लड़की के पिता इस घटना के बारे में मीडिया में उसका असली नाम और पहचान न देने के लिए कहते हैं। क्योंकि उसकी सगाई हो चुकी थी। लड़का कनाडा में था। लेकिन उसके परिवारवालें दिल्ली में रहते थे। खबर को सुनकर उनका क्या रवैया होगा इस बात से पिता चिंतित थे। वे कहते हैं कि "सब कुछ बचाने की कोशिश तो करूँगा ही न। आखिर पिता हूँ इसकालेकिन मैं जानता हू !ँ कि कुछ भी बचा नहीं है। बचा भी नहीं पाऊँगा।"[10] लड़की इंजीनियर थी। उसका एक मित्र सोमेश दोनों एक ही ऑफिस में काम करते थे। उस रात लड़की को बचाने की कोशिश में सोमेश की मौत हो जाती है। लोगों का कहना था कि "सोमेश को क्या पड़ी थी उन लोगों से उलझने की।..."[11] यहा इंसानों का स्वार्थ बोल रहा है। सिर्फ अपने में ही सिमटे रहने की व्यक्ति की सोच बोल रही है। सोमेश की बुढी माँ के सामने लड़की के पिता फूटफूट कर रो पड़ते हैं-। वे कहते हैं कि "मैं भी दहल गया हूँ, थक गया हूँ, टूट गया हूँ। इंसानियत हूँ, पुरुष वेश में हूँ। इसी वेश में घूमता हूँ। आजकल हर जगह मेरे अचेतन में यह खौफ बना ही रहता है कि कोई मेरा भी कत्ल कर देगा, जिससे हर समय मेरी भी रूह काँपती हैं।"[12]

'फाइलें,प्लेटफॉर्म, मुर्दाघर और वह पुलिया' एक बुजुर्ग पिता की कहानी है। जिनके बेटे लंदन-अमेरिका में रहते हैं। उनकी मानसिक स्थिति कुछ इस तरह से है कि अब बच्चें उनके पास है फिर भी उन्हें लगता है कि वे अकेले हैं। उनके साथ कोई नहीं हैं। वे सोचते है कि "देखो, आज मेरे पास पैसा नहीं है, तो मुझे कोई नहीं पूछता है। पैसे का युग है। आज आदमी क्या रह गया है? जब दूसरों के लिए जीता था, उनके काम आता था, तो पूछ होती थी, लेकिन अब क्या है? अब तो बोझ हूँ। लोग मारना चाहते हैं मुझे।"[13] उन्हें लगता है कि रसगुल्ले में नशेवाली दवा होगी। इसलिए वे सूंघकर खाते हैं। कभी उन्हें लगता है कि वे किसी पुल के ऊपर खड़े हैं जहाँ से लोग उन्हें धक्का देकर आगे निकल रहे हैं। उन्हें चोट लग जाती है। लेकिन कोई भी मुड़कर उनकी तरफ नहीं देखता। ऐसे लोगों के बारे में वे कहते हैं कि "वे इसी तरह आगे बढ़ने के अभ्यस्त थे। मैं आगे बढ़ने की सोचता ही

रहा और मेरे आगे से कितने लोग निकालकर मुख्य सड़क पर पहुँच गए।"[14] व्यक्ति अपनी स्वार्थसिद्धि में इस कदर खोया है कि उसकी वजह से दूसरों को अगर कोई परेशानी होती है तो भी उसे कोई फर्क नहीं पडता।

'गोरैया अब कम दिखने लगी है' कहानी में श्रेयस के पिता जी गाँव में रहते थे। इसलिए वह चाचा जी के साथ शहर में रहकर पढ़ाई करता है। वह बिना आयरन की शर्ट पहनता तो चाचा जी गुस्सा हो जाते थे। उन्हें मेहमानों के सामने श्रेयस को अपना भतीजा बताने में शर्म आती थी। चाचा जी के बच्चों के पुराने कपड़े उसे पहनने के लिए दिए जाते थे। दस साल बाद वह आईएएस ऑफिसर बन गया हैं। यूनिवर्सिटी के किसी काम के लिए उस शहर में आता है। अब सबका व्यवहार उसके प्रति बदल जाता है। वह चाचा जी से मिलने उनके घर जाता है। चाचा जी कहते है कि "चलो हम लोगों ने रखा, तो आज कुछ बन तो गए।"[15] यह बात सही है कि चाचा जी ने बचपन में उसे अपमानित करने का कोई मौका नहीं छोडा। लेकिन आज उसकी सफलता पर अपना उपकार जताना नहीं चुके। चाचा जी का व्यवहार देखकर उसे पुराने दिन याद आ जाते हैं। जब उसकी शर्ट में छेद देखकर उन्हें उसे अपना भतीजा मानने में शर्म आती थी। उनके व्यवहार से तंग आकर उसने पढने के लिए लाइब्रेरी के पास कमरा लिया था। आज चाची जी उसकी पसंद का खाना बनाती है। उसने होटल में कमरा लिया है ये जानकर चाचा जी उसे डाँटते हैं। अब वह दिल्ली में रहता है। चाची जी कहती है कि वे दिल्ली में अपोलो हॉस्पिटल में अपना इलाज करवाने आएगी। लेकिन श्रेयस का व्यवहार उनके प्रति आदरपूर्ण ही है। क्योंकि व्यक्ति कितना ही आगे बढ जाएउसे अपनी जड़ों को नहीं भूलना चाहिए। तभी रिता सिन्हा जी कहती , है कि"आदमी को हमेशा ऊपर की ओर देखना चाहिए, लेकिन यह नहीं भूलना चाहिए कि उसकी जड़े नीचे जमीन के भीतर है।"[16]

निष्कर्ष

आज परिस्थितियों के साथ व्यक्ति की सोच में बदलाव आ रहा है। परिवर्तन अवश्यंभावी है। लेकिन सही गलत की पहचान भी जरूरी है। सिर्फ स्वार्थ के आधार पर रिश्ते बनेंगे तो स्वार्थ पूरा होते ही बदल भी जाऐंगे। इसमें कोई बड़ी बात नहीं है। जब अपनों को अपनेपन का एहसास न दिलाया जाए तो अविश्वास की भावना पैदा होना स्वाभाविक है। एक पौधे को भी पानी से नियमित रूप से सींचना पड़ता है। वरना वह भी सूख जाता है। इसी प्रकार रिश्तों को भी अपनेपन और प्यार के पानी से सींचकर विश्वास को उसकी ताकत बनानी है। समाज के डर से निर्दोष होकर भी डरना खुद को अपराधी साबित करने के समान है। साँच को आँच नहीं। जब आप गलत नहीं हैं तो सही ,को साबित करने की जरूरत नहीं है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Sadhguru, Relationships Bond or Bondage, Jaico Publishing House, Mumbai, Page no 2
2. रीता सिन्हा, इनबॉक्स के अधूरे पन्ने, भावना प्रकाशन, दिल्ली ,2016 .सं .पृ ,64

3. रीता सिन्हा, इनबॉक्स के अधूरे पन्ने, भावना प्रकाशन, दिल्ली ,2016 .सं .पृ ,64
4. रीता सिन्हा, इनबॉक्स के अधूरे पन्ने, भावना प्रकाशन, दिल्ली ,2016 .सं .पृ ,64
5. रीता सिन्हा, इनबॉक्स के अधूरे पन्ने, भावना प्रकाशन, दिल्ली ,2016 .सं .पृ ,65
6. रीता सिन्हा, इनबॉक्स के अधूरे पन्ने, भावना प्रकाशन, दिल्ली ,2016 .सं .पृ ,70
7. रीता सिन्हा, इनबॉक्स के अधूरे पन्ने, भावना प्रकाशन, दिल्ली ,2016 .सं .पृ ,19
8. रीता सिन्हा, इनबॉक्स के अधूरे पन्ने, भावना प्रकाशन, दिल्ली ,2016 .सं .पृ ,24
9. रीता सिन्हा, इनबॉक्स के अधूरे पन्ने, भावना प्रकाशन, दिल्ली ,2016 .सं .पृ ,26
10. रीता सिन्हा, इनबॉक्स के अधूरे पन्ने, भावना प्रकाशन, दिल्ली ,2016 .सं .पृ ,86
11. रीता सिन्हा, इनबॉक्स के अधूरे पन्ने, भावना प्रकाशन, दिल्ली ,2016 .सं .पृ ,89
12. रीता सिन्हा, इनबॉक्स के अधूरे पन्ने, भावना प्रकाशन, दिल्ली ,2016 .सं .पृ ,90
13. रीता सिन्हा, इनबॉक्स के अधूरे पन्ने, भावना प्रकाशन, दिल्ली ,2016 .सं .पृ ,127
14. रीता सिन्हा, इनबॉक्स के अधूरे पन्ने, भावना प्रकाशन, दिल्ली ,2016 .सं .पृ ,128
15. रीता सिन्हा, इनबॉक्स के अधूरे पन्ने, भावना प्रकाशन, दिल्ली ,2016 .सं .पृ ,134
16. रीता सिन्हा, इनबॉक्स के अधूरे पन्ने, भावना प्रकाशन, दिल्ली ,2016 .सं .पृ ,135

****